

प्रेषक,

जी०एस०पाण्डे,
अपर सचिव
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

निदेशक,
रेशम विकास विभाग
प्रेमनगर-देहरादून।

उद्घान एवं रेशम अनुभाग:-2

देहरादून: दिनांक 4 नवम्बर, 2008
सितम्बर, 2008

विषय:-रेशम निदेशालय परिसर प्रेमनगर-देहरादून में टाइप-III के एक आवासीय भवन के निर्माण हेतु वित्तीय स्वीकृति के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्रांक-1871/रेशम/नॉन-प्लान/2008-09, दिनांक-22.07.2008 के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है, कि उत्तराखण्ड पेयजल संसाधन विकास एवं निर्माण निगम, देहरादून द्वारा रेशम निदेशालय परिसर प्रेमनगर-देहरादून में टाइप-III के एक आवासीय भवन के निर्माण हेतु गठित आगणन की कुल धनराशि रु०-11.98 लाख के सापेक्ष टी०ए०सी० द्वारा सम्यक परीक्षणोपरान्त संस्तुत रु०-11.12 लाख (रु० ग्यारह लाख बारह हजार मात्र) की लागत के संलग्न प्रारम्भिक आगणन की वित्तीय एवं प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान करते हुए इतनी ही धनराशि व्यय हेतु आपके निवर्तन पर रखे जाने की श्री राज्यपाल महोदय निम्नांकित शर्तानुसार सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं:-

- 1- कार्य करने से पूर्व मदवार दर विश्लेषण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता द्वारा स्वीकृत/अनुमोदित दरों के आधार पर तथा जो दरें शिड्यूल आफ रेट्स में स्वीकृत नहीं हैं, अथवा बाजार भाव से ली गई हैं, की स्वीकृति नियमानुसार अधीक्षण अभियन्ता से अनुमोदन करना आवश्यक होगा।
- 2- कार्य करने से पूर्व विस्तृत आगणन/मानचित्र गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से प्राविधिक, वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त करनी आवश्यक होगी। बिना ऐसी स्वीकृति के किसी भी दशा में कार्य को प्रारम्भ न किया जाय।
- 3- कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व प्रस्तावित कार्य स्थल का मृदा परीक्षण अवश्य करा लिया जाय, तथा मृदा परीक्षण आख्या में दिये गये सुझावों के अनुसार भवन निर्माण कार्य किया जाय।
- 4- कार्य पर उतना ही व्यय किया जाय जितनी राशि स्वीकृत की गयी है।
- 5- एकमुश्त प्राविधानों को कार्य करने से पूर्व विस्तृत आगणन गठित कर सक्षम अधिकारी से अनुमोदन अवश्य प्राप्त कर लिया जाय।
- 6- कार्य करने से पूर्व समस्त औपचारिकताएँ तकनीकी दृष्टि को मध्यनजर रखते हुए एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रचलित दरों/विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य को सम्पादित कराना सुनिश्चित करें।
- 7- कार्य कराने से पूर्व स्थल का भली भाँति निरीक्षण उच्च अधिकारियों एवं भूगर्भवेत्ता के साथ अवश्य करा लिया जाय। निरीक्षण के पश्चात् स्थल आवश्यकतानुसार निर्देशों तथा निरीक्षण टिप्पणी के अनुरूप कार्य कराया जाय।
- 8- आगणन में जिन मदों हेतु जो राशि स्वीकृति की गयी है, उसी मद पर व्यय किया जाय, एक मद का दूसरी मद में व्यय कदापि न किया जाय।
- 9- निर्माण सामग्री को प्रयोग में लाये जाने से पूर्व किसी प्रयोगशाला से टेस्टिंग करा ली जाय तथा उपयुक्त पाई जाने वाली सामग्री को ही प्रयोग में लाया जाय।
- 10- निर्माण सामग्री कय करने से पूर्व मानकों एवं स्टोर पर्चेज नियमों का पालन कड़ाई से किया जाय।
- 11- मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन के पत्र संख्या-2047/XIV-219/2006, दिनांक-30 मई, 2006 द्वारा निर्गत दिशा-निर्देशों का कार्य कराते समय अथवा आगणन गठित करते समय काड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।

सिद्ध

- 11- उक्त स्वीकृत धनराशि निदेशक, रेशम विकास विभाग के माध्यम से सम्बन्धित कार्यदायी संस्था को बैंक ड्राफ्ट/चैक द्वारा नियमानुसार उपलब्ध कराई जायेगी।
- 12- इस सम्बन्ध में होने वाला व्यय चालू वित्तीय वर्ष 2008-09 के आय-व्ययक में विभागीय अनुदान संख्या-29 के लेखाशीर्षक 2401-फसल कृषि कर्म-आयोजनेत्तर-119-बागवानी एवं सब्जियों की फसलें 07-शहतूत की खेती एवं रेशम विकास-0701-अधिष्ठान की उप मानक मद 24-बृहद निर्माण से किया जायेगा।
- 13- यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय संख्या-116(NP)XXVII-4/2008, दिनांक-10 सितम्बर, 2008 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

संलग्नक-यथोपरि।

भवदीय,

(जी०एस०पाण्डे)

अपर सचिव।

संख्या-105'3 /XVI/08/7(43)/2008, तददिनांक:

प्रतिलिपि-निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. महालेखाकार, उत्तराखण्ड, ओबराय मोटर्स बिल्डिंग मजरा, देहरादून।
2. परिष्ठ कोषाधिकारी, देहरादून।
3. वित्त अनुभाग-4, उत्तराखण्ड शासन।
4. परियोजना प्रबन्धक, उत्तराखण्ड पेयजल निर्माण निगम, देहरादून।
5. जिलाधिकारी, देहरादून।
6. निदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, सचिवालय परिसर देहरादून।
7. गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(जी०एस०पाण्डे)

अपर सचिव।